दैनिक मयराष्ट्र दिनांक 8 अगस्त 1968, मेरठ, देहली, कानपुर

रक्षा बन्धन पर ईश्वरीय शुभ संदेश (बड़े अक्षरों में)

पतित- पावन निराकार परमात्मा शिव (बड़े बड़े अक्षरों में)

गीता ज्ञान दाता

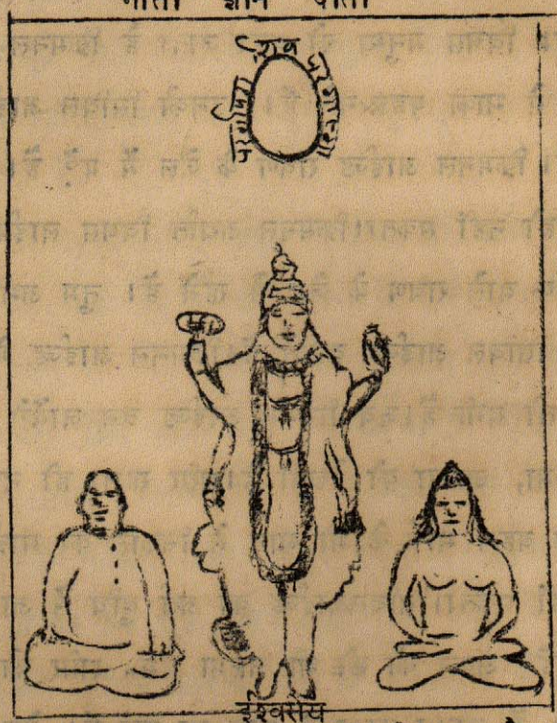

जीवन मुक्ति आप का/जन्म-सिध अधिकार है ।

ब्रह्मा द्वारा	विष्णु द्वारा	शंकर द्वारा
आदि सनातन देवी धर्म की स्थापना	आदि सनातन देवी धर्म की पालना	अनेक धर्मों का विनाश

रूहानी भाईयों और बहनों,

इस समय कलियुगी पतित दुनिया का अन्त और सतयुगी पावन दुनिया के आदि का कल्याणकारी पुरूषोत्तम संगम युग चल रहा है ।

इसलिए 5000 वर्ष पूर्व के समान परम-पिता, परम-शिक्षक, परम-सद्गुरु ज्ञान के सागर 'शिव' परमात्मा दिव्य और अलौकिक जन्म लेकर अर्थात प्रजापिता ब्रह्मा के साधारण मनुष्य तन में अवतरित होकर, अपने सर्व रूहानी बच्चों प्रित फरमान कर रहे हैं कि पतित से पावन बनने के लिए मुझ पतित पावन निराकार परमात्मा शिव को निरन्तर याद करो और निर्विकारी पवित्र जीवन को धारण करने की प्रतिज्ञा करो वा राखी बांधो । तब ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बन सकते हो और सतोप्रधान विश्व का 100 प्रतिशत पवित्रता, शान्ति, सुख-सम्पत्ति का अटल अखण्ड, निर्विघ्न सतयुगी आदि सनातन दैवी स्वराज्य 21 जन्मों लिये फिर से पा सकते हो सृष्टि नाटक योजना (World Drama Plain) अनुसार परन्तु होवनहार महाविनाश के पहले ।

ईश्वरीय सेवा में;

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

प्रातः क्लास 13-8-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। पहले2 जो अच्छे कर्तव्य करते हैं सेन्टर्स में उनकी महिमा की जाती है। बाबा आज मेरठ की महिमा कर रहे हैं। बच्चे सभी सुनते होंगे। मेरठ वालों ने अखबार में ब्लाक त्रिमूर्ति का डलवाया है और लिखत जो बाबा ने मुरली में लिखवाई थी वह भी डाली है। मेरठ में एक त्यागी बच्चा है, नाम ही है त्यागी। उसने अखबार वालों को समझा कर मेहनत कर अखबार में डलवाया है और प्रीं। जरूर अखबार वाले को आप समझ बनाया होगा। उसने जो कुछ लिखत उनको दी है वह स्क्युरेट उसने डाला है। सभी अखबार वाले कोई स्क्युरेट--

नहीं डालते हैं। अपनी मानव मत भी चलाते हैं। जिसको ही आसुरी मत कहा जाता है। एक है मानव बुद्धि दूसरी है ईश्वरीय बुधि। फिर होंगी देवी बुधि। मानव बुधि है आसुरी बुधि। क्रिमनल आईज्ड है ना। एक होती है सिविल आईज्ड। दूसरी होती है क्रिमनल आईज्ड। देवताओं की सिविल आईज्ड वायसलेस। और यहां कलियुगी मनुष्य हैं विषस क्रिमनल आईज्ड। विषस मनुष्य को कहा जाता है क्रिमनल आईज्ड। उनकी ख्यालात ही विषस होंगी। स्त्री पुरुष क्रिमनलआईज्ड से भाकी पहनते हैं। उनको सिविल आईज्ड नहींकहेंगे। सिविल आईज्ड होती ही है सतयुग में देवी देवताएं। क्रिमनल आईज्ड रावण के जेल में पड़े हैं। रावण राज्य में सभी हैं क्रिमनल आईज्ड। एक भी सिविल आईज्ड हो नहीं सकता। क्रिमनल अर्थात विषस लाईफ। सिविल आईज्ड कहा जाता है वायसलेस लाईफ को। विषस लाईफ वाले रावण के जेल में रहते हैं। तुम अभी ही पुरुषोत्तम संगम युग पर। अभी बाबा तुमको क्रिमनल आईज्ड से सिविल आईज्ड बनाते हैं। क्रिमनल आईज्ड में भी अनेक प्रकार के होते हैं। कोई सेमी कोई कैसे। क्रिमनल आईज्ड तो सभी हैं। जब सिविल आईज्ड बन जावेंगे तब वह कर्मातीत अवस्था होगी। ब्रदरली आईज्ड बन जाते हैं। आत्मा, आत्मा को देखती है। शरीर रहता ही नहीं तो क्रिमनल आई बने कैसे। इसलिए बाप कहते हैं अपन को बहन भाई के भी भान से निकाल कर भाई2 समझो। यह बड़ी गुह्य बातें हैं। कब किसको बुधि में आ नहीं सकता। सिविलआईज्ड का अर्थ बुधि में आ नहीं सकता। अगर आ जाये तो उंच पद पा ले। बाप समझाते हैं अपन को भी आत्मा समझ शरीर को भूलना है। यह शरीर छोड़ना भी है बाप की याद में। मैं आत्मा बाबा के पास जा रहा हूं। देह के सभी अभिमान छोड़ो पवित्र बन और पवित्र बनाने वाले बाप की ही याद में शरीर छोड़ कर जाना है। क्रिमनलआईज्ड होंगी तो अन्दर में जरूर खाता होगा। मंजिल तो बहुत ही भारी है। भल कोई भी अच्छे2 बच्चे हो तो भी कुछ न कुछ भूलें होती जरूर हैं। क्योंकि माया है ना। कर्मातीत तो कोई भी हो नहीं सकता। यह बाबा जानते हैं ना। यह भी उस कर्मातीत अवस्था को पिछाड़ी में पावेंगे। तब ही सिविल आईज्ड हो सकती है। वह रूहानी ब्रदरली लव रहता है। ब्रदरली लव में क्रिमनल दृष्टि नहीं होती। तब ही उंच पद पा सके। बाबा एकाव जेब तो पूरी बतावेंगे ना। बच्चे समझते हैं यह तो हमारे में खामी है। रजिस्टर जब रखेंगे तब खामी का पता पड़ेगा। हो सकता है कोई रजिस्टर न रखने से भी सुधर जा सकते हैं। परन्तु जो कच्चे हैं उनको तो रजिस्टर जरूर रखना चाहिए। कच्चे तो बहुत ही हैं। कोई कोई को तो लिखना भी नहीं आता। अवस्था तुम्हारी ऐसी चाहिए जो कोई की भी याद न आये। हम आत्मा तो नंगे हैं ना। इस पर एक कहानी भी है तुम लाठी भी नहीं उठाओ। नहीं तो वह पिछाड़ी में याद आवेंगे। कोई भी चीज़ में ममत्व न रखो। यहां तो बहुतों का ममत्व ठिक्करियों पर रहता है। बाप कहते हैं कुछ भी याद न आये सिवाय बाप के। कितनी उंची मंजिल है। नहीं तो अन्त में वह ठिक्करियां याद ही याद आती रहेंगी। और गिर पड़ेंगे। यहां तो ढेर के ढेर याद पड़ते हैं। उन्हीं की ही याद में रहते हैं। शिव बाबा तो याद आता ही नहीं है। कहां ठिक्करियां कहां शिव बाबा। बाप कहते हैं बच्चे यह छीछी ख्यालात भी छोड़ दो। सभी कुछ बच्चों को मिल रहा है। अपन को देखना चाहिए ऐसी कोई चीज़ तो नहीं मांगता हूं जो कि हमारे पास है। तमन्ना जरूरी नहीं होती। पाण्डव गवर्मेन्ट है ना। गवर्मेन्ट कहेगी तुमको इतना खिलाते पिलाते हैं तो इतना काम भी देना चाहिए। आठ घंटा तो नहीं तो 4 घंटा। 3-4 घंटा, एक घंटा। कुछ तो समय सर्विस में देना चाहिए। विषस मनुष्य कब भी बाप को याद नहीं कर सकते। सतयुग है वायसलेस वर्ल्ड। देवी देवताओं की महिमा गाई जाती है सर्व गुण सम्पन्न 16कला सम्पूर्ण..... कितनी उपराम अवस्था रहती है। कोई भी छी छी चीज़ में ममत्व नहीं रहना चाहिए। शरीर में भी ममत्व न रहे। इतना योगी होंगे तो वह जैसे सदैव ताजा तवाना रहेंगे। अथाह खुशी रहेगी जितना2 तुम सतोप्रधान बनेंगे उतना ही खुशी का पारा चढ़ेगा। 5000वर्ष पहले भी वही खुशी थी। जब तुम सतोप्रधान हो

है। अब तुमको वही खुशी होगी जो सतयुग में तुमको थी। वह यहां होंगी। फिर वह साथ ले जावेंगे। अन्त मति सो गति कहा जाता है ना। अभी की मत है। जो गति फिर सदगति में होनी है। यह बहुत ही विचार सागर मथन करना होता है। बाप तो है ही दुःख हर्ता सुख कर्ता। तुम कहते हो हम बाप के बच्चे हैं तो किसको दुःख न देना चाहिए। सभी को सुख कारास्ता बताना है। सुख नहीं देते हैं तो जरूर दुःख देते होंगे। असम्भव है कि जो दुःख न देते हों। या सुख देना होता है, या दुःख देना ही जाता है। आधा कल्प है सुख ही सुख। आधा कल्प है दुःख ही दुःख। यह पुरुषोत्तम संगम युग है तुम्हारा जब कि तुम पुरुषार्थ कर फिर सतोप्रधान बनते हो। पुरुषार्थ में नम्बरवार होते हैं।

तो बाबा ने देखा मेरठ का बच्चा त्यागी अच्छा है, योगी भी अच्छा दिखाई पड़ता है। अखबार वाले को समझा कर ब्लाक आदि डलवाया है। नाम ही है त्यागी। उन में कोई क्रिमनल ख्यालात नहीं। सर्विस अच्छी रिफाईन की है। सारी देह की दुनिया, नाम रूप आदि सभी का त्याग किया हुआ है जो सर्विस करते हैं उनकी बाप महिमा तो करते हैं ना। यह अच्छा योगी बच्चा है। बाबा महिमा तो करेंगे जो सच्चे दिल पसन्द सर्विसएबुल सिविलाईज्ड है। अर्थात बायसलेस लाईफ है। जब ख्याल भी न आये। वह अवस्था पिछाड़ी में होनी है। इस समय कोई कह न सके। बाबा को इनकी अवस्था अच्छी दिखाई पड़ती है। सिविल आईज्ड है। अखबार भल छोटी है। इनकी देहली कानपुर में भी ब्रान्चेज हैं। तुम ब्राह्मण हो सिर्फ भारत में सिविलआईज्ड बन रहे हो। पहले थे क्रिमनल आईज्ड। अभी बाप तुमको सिविल आईज्ड बना रहे हैं। मनुष्य को कब देवता नहीं कहा जाता। इसलिए भारतवासियों ने अपने को हिन्दु कह दिया है। अन्दर में खाता तो है ना हम सतयुगी नहीं हैं। अभी हम हैं ही कलियुगी। कलियुग है ही क्रिमनल आईज्ड। सतयुग में हैं सिविल आईज्ड। क्रिमनलआईज्ड से पाप जरूर होते हैं। वह तो है ही पवित्र दुनिया। यह है पतित दुनिया। यह अर्थ भी कोई समझ न सके। जब ब्राह्मण बने तब समझे। कहते तो हैं बहुत अच्छा ज्ञान है। जब पर्फेक्ट होंगे जरूर आऊंगा। बाबा समझाते हैं आवेंगे कब नहीं यह तो इनसल्ट हुई ना। समझते हैं ज्ञान बड़ा अच्छा है। हम मनुष्य से देवता बनते हैं। तो परहेज करना चाहिए ना। कल पर भी डाला तो माया नाक से पकड़ गटर में डाल देगी। कल कल करते काल खा जाता है। शुभ कार्य में देरी नहीं करनी चाहिए। काल तो सिर पर खड़ा ही है। कितने मनुष्य अचानक बैठे2 मर जाते हैं। अभी बाढ़ आया कितने मनुष्य मरे। मालूम था क्या इतने मनुष्य मरेंगे। अर्थक्वेक हो जाती है पहले पता थोड़े ही पड़ती है। ड्रामा अनुसार नेचरल कैलेमिटीज भी जरूर होनी है। जिनको तो कोई जान न सके। मालूम था कि सूरत में ऐसी बाढ़ आवेंगी। बहुत नुकसान होता है। फिरेल का किराया बढ़ा देंगे। मनुष्यों को तो जाना ही पड़े। कुछ कर थोड़े ही सकते हैं। ख्यालात करते रहते हैं कि आमदनी बढ़ावें जो मनुष्य दे भी सके। अनाज कितना महंगा हो गया है। तो बाबा को यह मेरठ की अखबार पसन्द आया। ब्लाक भल पुराना है परन्तु अक्षर क्लीयर है। गुंडा अक्षर बाबा को देखने में भी अच्छा नहीं लगता। छोड़ देते हैं। अक्षर सदैव अच्छी होनी चाहिए। तो बाप बैठ समझाते हैं सिविलआईज्ड को कहेंगे पवित्र आत्मा। यह तो दुनिया ही क्रिमनल आईज्ड तुम अभी सिविलआईज्ड बनते हो। मेहनत करनी है। नारायण बनना मासी का घर नहीं है। जो बहुत सिविलाईज्ड बनेंगे वही पद पावेंगे। कम से कम, वहां जाकर चण्डाल बनेंगे। तुम तो आये हो नर से नारायण बनने लिए। बाबा जानते हैं चण्डाल भी बहुत बनते हैं। आश्चर्यवत भागन्ती वाले भी चण्डाल बन जाते हैं। और जो क्रिमनलाईज्ड है वह ज्ञान उठा न सके। बाप को याद कर न सके। इस समय मनुष्यों को है क्रिमनलाईज्ड। नई में होते हैं सिविलाईज्ड। बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चों तुम देवी देवता स्वर्ग के मालिक बनना चाहते हो तो बहुत सिविलाईज्ड चाहिए। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करे तब 100प्रतिशतदेहीअभिमानी बन सके। कोई को भी यह अर्थ समझाना है। सतयुग में पाप की कोई बात ही नहीं होती। वह है ही सर्वगुण सम्पन्न। 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, सम्पूर्ण सिविलाईज्ड। चन्द्रवंशियों की भी दो कला कम होती है। कला कम हो

होते पिछाड़ी में बाकी आकर लीक रह जाती है। एकदम नील नहीं होती है। कहेंगे प्रायः लोप हो गया। बादलों में दिखाई नहीं पड़ता है। तो बाप भी कहते हैं तुमहारी ज्योत एकदम बुझ नहीं जाती है कुछ न कुछ लाईट रहती है। फिर सुप्रीम बेटरी से तुम पावर लेते हो। खुद ही आकर सिखलाते हैं कि मेरे साथ तुम कैसे योग रख सकते हो। टीचर पढ़ाते हैं तो बुधि योग टीचर के साथ रहती है ना। टीचर जो मतदेंगे वह पढ़ेंगे। हम भी पढ़ कर टीचर अथवा बैरिस्टर आद बनेंगे। उसमें कृपा वा आशीर्वाद की बात नहीं रहती। माथा टेकने की भी दरकार नहीं। हां कोई हरिओम, या रामराम करते हैं तो रिटर्न में करना पड़ता है। यह एक ईज्जत देनी है। हठ नहीं दिखाना है। तुम जानते हो हमको तो एक बाप को ही याद करना है। भक्ति नहीं करने से कोई नाराज होते हैं तो तो भक्ति की नकल कर भी दिखानी चाहिए। कोई भक्ति छोड़ते हैं तो भी हंगामा हो जाता है। भक्ति छोड़ने वाले को नास्तिक कह देंगे। उनको नास्तिक कहने और तुम्हारे कहने में कितना फर्क है। तुम कहते हो वह बाप को ही नहीं जानते इसलिए नास्तिक हैं। सभी लड़ते झगड़ते रहते हैं। घर घर में झगड़ा अशान्ति होते हैं। क्रोध की निशानी है अशान्ति। वहां कितनी अपार शान्ति है। मनुष्य कहते हैं भक्ति में बहुत शान्ति मिलती है। परन्तु वह है अलप काल के लिए। सदा के लिए शान्ति चाहिए ना। तुम निधणका फिरधणका बनते हो। तब फिर शान्ति से अशान्ति में जाते हो। बेहद का बाप बेहद के सुख का वरसा देते हैं। वह वास्तव में है दुःख। कामकटारी का दुःख ही दुःख है। इसलिए बाप कहते हैं तुम आदि मध्य अन्त दुःख पाते हो। एक दो पर कामकटारी चलाने वाले को याद भी न करना चाहिए। बाप समझाते हैं अपने को आत्मा समझो। मेरे को यादकरो तो पाप कट जावेंगे और सब भी चाहिए बाप को याद करने में। बहुत हैं जो अपने को आत्मा समझ न सके। तो उन्हों के कर्तव्य भी ऐसे चलते हैं। यहां बैठे हुये भी सुनते नहीं हैं। नहीं तो कोई कोभी दो बाप का राज़ समझना बहुत सहज है। बेहद का बाप ब्रह्मा द्वारा हमको यह बनाते हैं। यह (ल०ना० बनने लिए पवित्र जरूर बनना पड़े। बाप कहते हैं मुझ पतित पावन को याद करो। इसको कहा जाता है सहज याद और सहज ज्ञान। बाप मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। वही पतित पावन है। यह ल०ना० का चित्र सब से फर्स्ट क्लास है। झाड़ भी कम नहीं है। झाड़ के चित्र से सभी समझ जावेंगे हम इस हिसाब से स्वर्ग में आ सकते हैं। या नहीं। अपने को आदि सनातन देवी देवता धर्म का समझेंगे तो जरूर स्वर्ग में आवेंगे। पहले तो समझे बरोबर हम ही देवता थे। फिर अभी जरूर बनना है तब श्रीमत पर चले। सिविलाईज्ड सतयुग में थी। देहअभिमान को क्रिमनलाईज्ड कहा जाता है। सिविलाईज्ड वह देवी देवतायें थे। मनुष्य हैं क्रिमनलाईज्ड परन्तु बन्दर बुध समझते नहीं है कि यह हमको कहते हैं। अपने को क्रिमनलाईज्ड समझे तो तो कहे भी हमको सिविलाईज्ड बनाओ। सिविलाईज्ड में कोई विकार होता ही नहीं। तब ही ऊंच पद पावेंगे। सभी को बताओ यह क्रिमनलाईज्ड विषय दुनिया है। क्रिमनल अर्थात उलटा काम करती है। इसलिए तुम पूछते भी हो कि कलियुगी क्रिमनलाईज्ड हो कि या सतयुगी सिविलाईज्ड हो। पता नहीं यह प्रश्नावली अंग्रेजी में छपाया है या नहीं। अंग्रेजी भाषा तो अन्त तक चलने वाली है। आजकल तो अंग्रेजी ही पढ़ते रहते। इसको बदलो कैसे कर सकते हैं। क्रिमनलाईज्ड मनुष्य तंग करने लिए ऐसे2 कायदे निकाले हैं। बाप कहते हैं सिर्फ दो अक्षर याद करो। अलफ को याद करो। अंगुली से ईशारा किया जाता है ना। अच्छे सेन्सीबुल मनुष्य जो होंगे वह सिर्फ अंगुली से ईशारा करते हैं अलफ को याद करो। वही पतित पावन है। उनको याद करने से पाप भस्म होंगे। और बाप से जरूर स्वर्ग का वरसा मिलेगा। बाकी चाहिए ऊंच पद। इसके लिए पुरुषार्थ करना है। और कोई मेहनत की बात नहीं। बाप कितना सहज कर समझाते हैं परन्तु वह भी याद नहीं रहता। क्योंकि क्रिमनलाईज्ड हैं। तो उनको यह छी छी दुनिया बहुत याद पड़ती रहती है। बाप कहते हैं इस दुनिया को भूल जाओ। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों बाप दादा का याद प्यारगुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

-:* शिव बाबा याद है *:-